nwda.gov.in

हरियाली न जल संचयन, अब झेल रहा गर्मी का 'ताप'

मुंगेशपुर में रकबा कम होने से किसानों ने पेड़ लगाने किए बंद, जल संचयन व संरक्षण की दिशा में नहीं दिया ध्यान

धर्मेंद्र यादव ● जागरण

बाहरी दिल्ली : हरियाणा की सीमा से सटा दिल्ली का अंतिम गांव मुंगेशपुर गर्मी का 'ताप' झेल रहा है। आखिर, मुंगेशपुर का तापमान आसपास के क्षेत्रों से ज्यादा क्यों है, क्या वजह हैं? यह स्थिति यकायक नहीं बनी है, बल्कि इसके लिए तीन से चार दशक की उदासीनता जिम्मेदार है। हरियाली यहां दम तोड़ चुकी है, धरती की कोख में पानी का भंडार कम हो गया है। गांव के तालाब सूख चुके हैं, जिससे पशु-पक्षी भी प्यासे हैं। इस ग्रामीण शहरी क्षेत्र का पारिस्थितिकी तंत्र चौपट हो चुका है। इस बार मुंगेशपुर में सर्वाधिक तापमान रिकार्ड किया गया, जिसे मौसम विभाग ने यंत्र की त्रुटि बताकर खारिज भी कर दिया।

मुख्तार सिंह ●

महेंद्र सिंह राणा ●

दिल्ली सरकार के सेल्स टैक्स विभाग से सेवानिवृत्त मुख्त्यार सिंह कहते हैं कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति उदासीनता अब मुंगेशपुर को आंख दिखाने लगी है, जिसकी कई वजह हैं। वह कहते हैं कि गांव का तापमान आसपास के क्षेत्र की तुलना में ज्यादा है, जिससे लोगों का जीवन मुश्किल से भर गया है। इतनी अधिक गर्मी इसी वर्ष ही महसूस नहीं की गई है, बल्कि तीन से चार वर्ष से गांववासी झुलसाकर रख देने वाली भीषण गर्मी झेल रहे हैं, बेहद परेशान हैं, लेकिन करें भी तो क्या। वह बताते हैं कि दोपहर को पूरे गांव में सन्नाटा पसर जाता है, ऐसा पहले नहीं होता था। गांव में चहल-पहल रहती थी। गांव के बाजार में दिन के हर समय रौनक रहती थी, लेकिन अब ग्राहक ही नहीं है। लोग घर से निकल ही नहीं रहे हैं, जब तक कि बेहद जरूरी न हो। सुबह से लेकर शाम तक घरों में कूलर चल रहे हैं, बिना इनके गुजारा नहीं है। वायु सेना से सेवानिवृत्त खेमचंद राणा ने बताया कि मुंगेशपुर ने 30-35 वर्ष में अपनी हरियाली गंवा दी है। गांव के तापमान को हरियाली नियंत्रण में रखती थी, लेकिन बीते दशकों में पेड़ों की बेतहाशा कटाई हुई है। पेड़ काटे तो गए, लेकिन लगाए नहीं गए। रकबा कम होने के कारण किसानों ने अपने खेतों में पेड़ लगाना बंद कर दिया। इससे पर्यावरण पर बड़ी चोट पहुंची है। इतना ही नहीं गांव में जल संचयन के स्रोत भी नहीं बचे हैं।

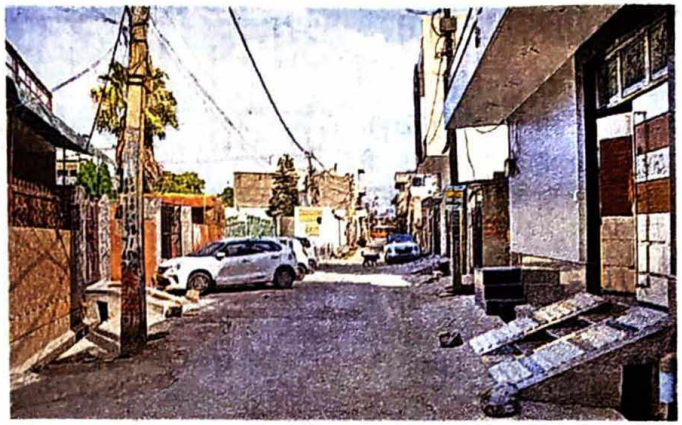

मुंगेशपुर गांव में दोपहर के समय पसरा पड़ा सन्नाटा ● जागरण

मुंगेशपुर गांव स्थित तालाब में बंद पड़ा वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का कार्य ● जागरण

औद्योगिक क्षेत्र की भट्ठियों में प्लास्टिक, रबर जलाई जाती है

सेवानिवृत्त शिक्षक महेंद्र सिंह राणा बताते हैं कि क्षेत्र के अन्य गांवों की तुलना में मुंगेशपुर का तापमान अधिक होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि गांव से सटे हरियाणा के औद्योगिक क्षेत्र फिरोजपुर स्थित कई फैक्ट्रियों में भट्ठियों में पुरानी बैटरी, प्लास्टिक और रबर से बनी वस्तुएं जलाई जाती हैं, इसे ईंधन के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। शाम ढलने के साथ ही भट्ठियों से निकलने वाला धुआं और बदबू इतनी परेशान करती है कि घर से बाहर निकलना दूभर हो जाता है। इन फैक्ट्रियों से निकलने वाला केमिकल ड्रेन नंबर-8 में डाला जाता है।

गांव के चारों तालाब सूखे, एक को ट्यूबवेल से पानी डालकर भरा गया

जल संचयन की बदतर स्थिति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि मुंगेशपुर गांव में चारों तालाब सूख चुके हैं। पशु- पक्षियों के लिए पानी का संकट खड़ा हो गया। जब गर्मी बढ़ी तो गांव वासियों ने ही देवता वाला तालाब को ट्यूबवेल के पानी से भरा, जिससे गांव के पशु-पक्षियों को राहत मिल सकी। यहां तक कि एक तालाब में करीब दो वर्ष पहले वाटर ट्रीटमेंट प्लांट लगाया गया था, लेकिन अब न प्लांट चल रहा है न ही तालाब ही बचा है। ग्रामीण विकास सेवा संगठन के महासचिव मास्टर महेंद्र सिंह राणा ने बताया कि गांव में जल संचयन के स्रोत खत्म हो चुके हैं। तालाब में पानी नहीं होना किसी भी गांव के लिए विकट स्थिति है। यहां तक कि भूजल स्तर भी हर वर्ष एक फुट से गिर रहा है। 40 वर्ष पहले जहां महज 20 फीट पर पानी मिल जाता था, वह अब 60 फीट पर मिल रहा है। जल संरक्षण और जल संचयन पर ध्यान नहीं दिया गया।

फिरोजपुर बांगर के आसपास रबर जलाने और केमिकल वेस्ट छोड़ने से तापमान बढ़ने की आशंका गलत है। क्योंकि यहां सैकड़ों बायलर चलते हैं। बड़े औद्योगिक क्षेत्र में 250 बायलर चलते हैं, पर तापमान में कोई फर्क नहीं पड़ता। ऐसा ही कुंडली - **प्रदीप सिंह**, क्षेत्रीय अधिकारी, प्रदूषण नियंत्रण अधिकारी, सोनीपत

हरियाणा की ओर से आने वाली पश्चिमी या उत्तर-पश्चिमी गर्मी का पहला झटका मुंगेशपुर, नरेला और नजफगढ़ जैसे क्षेत्र ही झेलते हैं। चूंकि, ग्रामीण शहरी क्षेत्र का पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ रहा है, इसलिए तापमान परेशानी बढ़ा रहा है। - **कुलदीप श्रीवास्तव**, वरिष्ठ विज्ञानी, मौसम विभाग